

तु. d. तस्करस्यान्तः.

1194. Vgl. Spruch 4628. fgg.

1207. = KĀN. 7 bei WEBER. VṚDDHA-KĀN. 1, 5.

1210. = KĀN. 32 bei WEBER.

1211. Vgl. noch Spruch 1923.

1213. = VṚDDHA-KĀN. 14, 9. a. न दूरस्थो st. समीपस्थो. b. यो यस्य मनसि स्थितः.

c. यो यस्य हृदये नास्ति.

1232. = KĀN. 102 bei WEBER (a. न्यस्येत्. c. सत्यपूतं वदेद्वाक्यं). VṚDDHA-KĀN. 10, 2 (b. पिबेज्जलं. c. शास्त्रपूतं वदेद्वाक्यं). KAVITĀMṚTAK. 4 (c. वाणीं st. वाचं).

1233. = PRASAṄGĀBH. 6, a. a. एकत्रासनसंगते. b. एकस्मिन् st. एकस्या, महतः क्रीडा-  
नुबन्धच्छलात् st. विहित°. c. तिर्यग्वक्रित, सपुलकस्वेदोद्गमानंदिनीं.

1236. ĀTAKĀV. 34. a. भारे st. जालं.

1237. = KAVITĀMṚTAK. 38.

1260. = KAVITĀMṚTAK. 31 (a. दुर्मन्त्रान्°, welche Variante auch andere Autt. haben.

c. अन्नपेक्षाणाद्). PRASAṄGĀBH. 16, a (d. व्यूता प्रमादाद्धनं d. i. व्यूतात्प्र°).

1264. b. सेव्यः सेव्यगुणान्वितः (wie PAṆKĀT.) Comm. zu KĀM. NĪTIS.

1263. = PRASAṄGĀBH. 14, a. a. मृगदृशः. c. स्वादिषु, तद्वपुर् st. तत्तनुर. d. तद्विधः.

1270. = MBH. 12, 665. 2049. 13, 2180. a. भूमिरितौ निगिरति an zwei Stellen. b. विलशयानि च ed. Calc. an einer Stelle. c. चाविरोद्धारं st. चाप्ययोद्धारं an zwei Stellen.

1273. = PRASAṄGĀBH. 7, a. In der Note ist पुरुषौ लोके zu lesen, wie auch PRASAṄGĀBH. hat.

1280. = MAHĀN. 389. a. द्विशरं नैव संधत्ते. d. नैव भाषते.

1287. = VṚDDHA-KĀN. 7, 2. 12, 21. b. विद्यासंग्रहणे तथा und विद्यासंग्रहणेषु च.  
d. सुखी st. सदा.

1303. = VṚDDHA-KĀN. 16, 13. a. धान्येषु. b. चाक्षरकर्मसु st. भो°. c. प्राणिनः st. मानवाः.

1303. = KAVITĀMṚTAK. 47. a. कुलीनाः क्रियते st. कु° भ°. b. आपदे. c. धनेभ्यो न कश्चित्सुहृद्विद्यते ऽन्यो.

1310. BHARTR. 1, 92 lith. Ausg. III. b. त्रय st. पूर्ण. c. लसन् त्रि°.

1318. = VṚDDHA-KĀN. 3, 20. 13, 10. a. मोक्षेषु an einer Stelle. b. यस्य को ऽपि. c. मृततुल्यः स विज्ञेयस् an einer Stelle und nur in einer Ausg. c. d. जन्मजन्मनि मर्त्येषु मरणं तस्य केवलं an einer Stelle und nur in einer Ausg.

1321. a. धर्मेण st. धर्मार्थ Comm.

1324. = ÇUK. ed. Bomb. S. 24. a. आतपत्राणी. c. सदारमाश्रमातङ्गा.